International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों में घरेलू कार्यों में स्वच्छ जल का उपयोग एवं समस्यायें – एक भौगालिक अध्ययन (मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के विशेष सन्दर्भ में)

धर्मेन्द्र प्रताप यादव[1], मेजर डॉ.संजय सोहनी[2]

[1]शोधार्थी, भूगोल विभाग ,भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय , डॉ. अम्बेडकर नगर, महू ,इन्दौर,मध्यप्रदेश ,भारत

[2]प्राध्यापक, भूगोल विभाग ,भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय , डॉ. अम्बेडकर नगर, महू ,इन्दौर,मध्यप्रदेश ,भारत

सारांश

जल संसाधन पृथ्वी पर महत्वपूर्ण संसाधन है। जल संसाधन के बिना जीवन की कल्पना करना असम्भव है। हमारी पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जहॉ पर जल और वायु विद्यमान है। पृथ्वी पर 71 प्रतिशत जल और 29 प्रतिशत स्थल भाग है। 71 प्रतिशत जल में लगभग 97.3 प्रतिशत नमकीन या खारा जल है तथा 2.7 प्रतिशत ताजा या साफ जल है। ताजा एवं साफ जल भूमिगत जल के रूप में , सतही जल के रूप में तथा ग्लेशियर एवं बर्फ की टोपियों के रूप में विद्यमान है। यही जल घरेलू कार्यों में सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

मध्य प्रदेश भारत का सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाला प्रदेश है। मध्य प्रदेश का झाबुआ जिला जनजाति बाहुल्य जिला है। स्वच्छ एवं साफ जल घरेलू कार्यों में स्नान करने ,खाना बनाने, साफ – सफाई एवं पेय जल आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है। स्वच्छ एवं साफ जल की कमी से अनेक समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं।

शब्दकुॅजी – स्वच्छ एवं साफ , जल संसाधन , जनजाति , जीवन , उपयोग ,सतत् विकास

प्रस्तावना

पिछले कई वर्षों से वातावरण परिवर्तन के अनुमान के अनुसार भारत में जल संकट भीषण रुप धारण करता जा रहा है । एवरी थिंग एबाउट वाटर की एक रिपोर्ट के अनुसार 2025 तक भारत में भीषण जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसका मुख्य कारण भूमिगत जल स्तर में दिन – प्रतिदिन तीव्रता से कमी होना है।

भारत में कृषि की सिंचाई का लगभग 70 प्रतिशत और घरेलू जल खपत का 80 प्रतिशत भाग भूमिगत जल से उपलब्ध होता है। इसीलिए भारत में जल संकट भीषण रुप धारण कर रहा है।

जल का गम्भीर संकट आने वाले 10 वर्षों में ही भयावह रुप धारण कर सकता है। विभिन्न स्टडी एवं रिपोर्ट स`जल समस्यायें सामने आ रही हैं। संयुक्त राष्ट्र के आंकडों के अनुसार सन 2025 तक विश्व की 1.8 अरब जनसंख्या पीने के पानी के संकट का शिकार हो जायेगी । वर्ल्ड इकोनॉमी फोरम भी अपनी 2015 की रिपोर्ट में यह स्पष्ट कर चुकी है कि अगले दशक में प्राणियों के सम्मुख सबसे बडा संकट जल संकट होगा।यह बात भी बार –बार मुददे के रुप में उभरती रही है कि तीसरे विश्वयुध्द के रुप में जल युध्द हो सकता है। भारत में जल संसाधन प्रचुर मात्रा में है लेकिन भारत के कई राज्य पानी की समस्या से जूझ रहे है। जैसे–महाराष्ट्र , राजस्थान , मध्यप्रदेश , कर्नाटक आदि।

पानी की कमी के कारण आज दुनिया के सामने कई खतरे मंडरा रहे हैं जिसका असर शान्ति , न्याय और सुरक्षा पर भी पडता है। पानी की कमी से सामाजिक – आर्थिक वृध्दि भी प्रभावित होती है।

जल संसाधन महत्वपूर्ण संसाधन है। इसीलिए जल संसाध्न उपयोग में सम्पोषणी विकास अर्थात सतत विकास को ध्यान में रखना चाहिए। सतत किास (sustainable development) वह अवधारणा है , जिसके तहत वर्तमान की आवश्यकताओं के साथ – साथ भविष्य की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाता है। UNO ने 17 सतत विकास लक्ष्यों का निर्धारण किया है –

Sustainable Development Goals- SDG´s

(Set by UNO)

1	गरीबी की सभी रुपों की पूरे विश्व से समाप्ति।
2	भूख (Hunger) की समाप्ति , खाद्य सुरक्षा , बेहतर पोषण और टिकाउ कृषि को बढावा ।
3	सभी आयु के लोगों में सेहत और स्वस्थ जीवन को बढावा।
4	समावेशी व न्यायसंगत गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को आजीवन सीखने का अवसर देना।
5	लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लडकियों को सशक्त करना।
6	सभी के लिए स्वच्छ जल एवं सफाई (Clean Water and Sanitation) की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

सतत् विकास लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त करना है। इन लक्ष्यों में स्वच्छ जल की उपलब्धता को छठें स्थान पर रखा गया है।

मध्य प्रदेश भारत की सबसे अधिक जनजाति जनसंख्या वाला राज्य है। मध्य प्रदेश का झाबुआ जिला जनजाति बाहुल्य जिला है।

मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में जनजाति जनसंख्या एवं प्रतिशत्

(जनसंख्या आंकड़ा 2011 के अनुसार)

क्रम संख्या	तहसील	कुल जनसंख्या	जनजाति जनसंख्या	प्रतिशत
1	थांदला	182362	163195	89.49
2	पेटलावद	232800	185572	79.71
3	मेघनगर	171944	154625	89.93
4	झाबुआ	323204	286583	88.67
5	रानापुर	114738	101843	88.76
योग		1025048	891818	87.00

जल की कमी एवं प्रदूषित जल से जलजनित अनेक समस्यायें व्याप्त होने लगती हैं। स्वच्छ जल की कमी से घरेलू कार्यों जैसे पेयजल, साफ – सफाई आदि समस्यायें उत्पन्न होने लगती हैं।

उद्देश्य – झाबुआ जिले में साफ एवं स्वच्छ जल का उपयोग एवं समस्याओं का अध्ययन करना।

अध्ययन का क्षेत्र – अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश के जनजाति बाहुल्य झाबुआ जिले को लिया गया है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिकएवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है।

प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन एवं समूह चर्चा के माध्यम से, द्वितीयक आंकड़े समाचार पत्र, पत्रिकायें, पुस्तक, जिला गजेटियर आदि के माध्यम से एकत्रित किए गये हैं ।

अध्ययन का समग्र जनजाति परिवार है तथा अध्ययन की ईकाई एक जनजाति परिवार है। जनजाति परिवारों के अध्ययन का आधार उददेश्यपूर्ण निदर्शन विधि है।

उपयोग –

• पीने के पानी की सबसे अधिक आपूर्ति के द्वारा होती है। इसके अलावा नदी, तालाब, कुऑ का उपयोग किया जाता है।

• पानी की व्यवस्था के लिए 500 मीटर से अधिक दूरी तय करनी पड़ती है।

• पेयजल के अलावा अन्य कार्यो के लिये जनजाति परिवार नालों पर निर्भर हैं।

• नवीन घरों के निर्माण, साफ – सफाई, नहाने, जानवरों को पानी पिलाने आदि घरेलू कार्यों में जल का उपयोग बढ़ गया है।

• सिंचाई में उपयोग कम होता है।

समस्यायें –

• हैन्डपम्पों के खराब हो जाने से जनजाति परिवारों को गम्भीर समस्यायों का सामना करना पड़ता है।

• वर्षभर साफ एवं स्वच्छ जल प्राप्त न हो पाने के कारण जनजाति परिवारों को गन्दा एवं प्रदूषित जल ग्रहण करना पड़ता है।

• पानी की व्यवस्था हेतु अधिक दूरी तय करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

• वर्तमान समय में जनसंख्या अधिक बढ़ जाने के कारण घरेलू उपयोग में अधिक जल दोहन स`जल स्त्रोत शीघ्र ही सूख जाते हैं।

•जल स्त्रोतों की कमी के कारण सिंचित कृषि भूमि का रकबा कम है।

निष्कर्ष – जल बहुत ही महत्वपूर्ण संसाधन है। अतः जल संसाधन के उपयोग में धारणीय विकास को ध्यान में रखना चाहिए जिससे वर्तमान और भविष्य की समस्याओं से निपटा जा सके और भविष्य में समस्यायें उत्पन्न ना हों।

जल समस्याओं को दूर करके जनजाति क्षेत्रों का विकास किया जा सकता है जिससे देश का भी विकास सम्भव है।

सन्दर्भ –

• मिश्रा एस.पी. (2007), जल संसाधन प्रबन्धन एवं संरक्षण, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर

• ओमप्रकाश एवं सिंह पी.के.(2007), मृदा , जल संरक्षण एवं सिचाई , जल निकास , रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ ।

• ओमप्रकाश (2006), सिचाई एवं जल प्रबन्धन , रामा पब्लिशिंग हाउस , मेरठ ।

• माथुर पी.सी.गुर्जर, आर.के. (2004), वाटर एण्ड मैनेजमेन्ट इन इण्डियन इकोनॉमी, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

• District Cencus Handbook, Jhabua , Series -24, Part 12-A, Madhya Pradesh, Census of India 2011.

• खुराना इन्दिरा , संरक्षण एवं समझ भरे प्रयोग स`जल संवर्धन, जुलाई (2016) , अंक 7 , पृष्ठ 13 , योजना , नई दिल्ली ।

• शुक्ल श्रवण , जुलाई (2016), अंक 7 , पृष्ठ 53 , योजना , नई दिल्ली।

• पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण (2020), सम्पोषणीय विकास , घटनाचक्र , प्रयागराज।